OM 16 EDITED final_Page 1 and 2 19-11-2014 22:40 Page 8

काठमाण्डु-नेपाल। नेपाल के माननीय उप-प्रधानमंत्री तथा स्थानीय विकास मंत्री प्रकाश मान सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज तथा ब्र.कु. किरण।

जम्मू। बी.एस.एफ. फ्रंटियर,हेड क्वार्टर कैम्पस में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट प्रोग्राम' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सुदर्शन, राकेश शर्मा,आई.जी.,बी.एस.एफ, ब्र.कु. अशोक गाबा, ब्र.कु. शिव सिंह,नेवी कमांडर, ब्र.कु. रविंदर तथा अन्य।

इन्दौर-पारसी मोहल्ला छावनी। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए शहर के गणमान्य जन तथा ब्र.कु. सुमित्रा।

झालावाड़। 'सिकरेट ऑफ सक्सेस' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए डॉ. गिरीश पटेल, मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. बी.डी. बोहरा, हॉस्पिटल के चीफ डॉ. पुष्पा पाण्डे, वुमेन हॉस्पिटल के चीफ डॉ. डी.के. जैन तथा ब्र.कु. मीना।

माउण्ट आबू। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की बेटी उपिन्द्र सिंह कौर और उनके पति विजय टंकाजी से ज्ञान चर्चा करने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. शशिकांत तथा अन्य।

पुणे। सकाल के सम्पादक मल्हार अरणकाले को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुनंदा, ब्र.कु.नलिनी, ब्र.कु.विधा।

सद्गुणों को विकसित कर करें आत्मा को तेजोमय

दुनिया में जितनी भी महान हस्तियां होकर गई हैं, उन महान हस्तियों के जीवन का रहस्य क्या था? थे तो वे भी हमारे जैसे ही साधारण मनुष्य चाहे स्वामी विवेकानंद हों, महात्मा बुद्ध हों, महावीर स्वामी हों या मदर टेरेसा हों। आदरणीया दादीजी को भी हमने देखा, पिताश्री ब्रह्मा बाबा को भी देखा कि उनका जीवन स्वधर्म के आधार पर था। इनके जीवन में, इन सातो गुणों के आधार से बैट्री फुल चार्ज थी। हरेक के जीवन में यही देखेंगे की आध्यात्मिक ज्ञान था, आध्यात्मिक विवेक था, पवित्रता थी, ब्रह्मचर्य व्रत था, नि:स्वार्थ प्यार उन्होंने संसार की आत्माओं को दिया। शांति से भरपूर उनका जीवन था। सच्चा सुख अर्थात् आत्म-सुख का अनुभव वे करते थे और दूसरों को भी यही प्रेरणा देते थे। जीवन में निरंतर प्रसन्नता, आनंद समाया हुआ था और आत्मशक्ति से वे भरपूर थे। इन सातो गुणों से उनकी बैट्री फुल चार्ज थी, इसलिए दुनिया में वे कई आत्माओं के लिए प्रेरणास्रोत बन गए। वे तो हमारे जैसे इंसान ही थे और हम भी इंसान ही हैं। इन्हीं सतोगुण की शक्ति को हम जीवन में जागृत करें। अपनी बैट्री को फुल चार्ज करें तो वास्तविक जीवन स्वधर्म के आधार पर जीना आसान हो जायेगा, हर संघर्ष में विजयी बनना निश्चित हो जायेगा। दूसरों के लिए भी प्रेरणा के आधार हम बन जायेंगे। यही विधि भगवान ने अर्जुन को बतायी और कहा कि यदि तुम इस युद्ध में मरोगे तो स्वर्ग में राज्य प्राप्त करोगे। युद्ध में जीतोगे तो पृथ्वी पर स्वराज्य अधिकार को प्राप्त करोगे। स्वराज्य अर्थात् आत्मा स्वयं की इंद्रियों के ऊपर राज्य अधिकार को प्राप्त करेगी।

यह युद्ध आसुरी और दैवी संस्कारों के बीच चलता है। जो व्यक्ति अपने आसुरी संस्कारों को जीत लेता है वह स्वर्ग में भी देव पद प्राप्त करने के योग्य बन जाता है। जहां भगवान ने स्वधर्म के आधार पर युद्ध करने की प्रेरणा दी, कैसे हर परिस्थिति में विजयी बनेंगे इसका विश्वास भी दिलाया। ये युद्ध अंतर जगत का युद्ध है जो हर एक के अंदर समाया हुआ है। जो कुरुक्षेत्र है वह दैवी और आसुरी संस्कार के बीच में है। हमें अपने जीवन को आसुरी संस्कारों से मुक्त करना है और दैवी संस्कारों से भरपूर करना है, जिससे हम अपने जीवन के हर संघर्ष में विजयी हो सकें। यह था पहले और दूसरे अध्याय का सार। सर्व शास्त्रमयी शिरोमणी श्रीमद्भगवद्गीता जो भगवान की मधुर वाणी है, वह हम सर्व अर्जुनों के प्रति मधुर संदेश है कि हमें जीवन को किस तरह जीना है।

प्रथम भाग में हमने देखा कि किस प्रकार से गीता का अस्तित्व हम सब के सम्मुख आया। उसी के साथ-साथ अर्जुन जैसे एक महावीर, महायोद्धा जिसकी भी मन:स्थिति जब निराश हो गयी तो उस मन:स्थिति में से उसको बाहर निकालने के लिए भगवान ने सर्व प्रथम उसको आत्मा का यथार्थ ज्ञान दिया। आत्मा का ज्ञान देते हुए यही समझाया की यह शरीर तो एक वस्त्र मात्र है। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है अर्थात् जो सदियों से हम सुनते आए हैं कि अपने आपको जानो, अपने आपको पहचानो वही पहचान अर्जुन को स्वयं से करायी कि शरीर एक साधन है और आत्मा एक साधक है। वह एक दिव्य और शाश्वत् शक्ति है, जिसके ऊपर प्रकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। लेकिन हाँ, आत्मा के संस्कारों में हम जितना सद्गुणों का विकास करते हैं, उतना ही हम आत्मा की शक्ति को व आत्मा की आभा को बढ़ाते हैं तथा उसके दिव्य तेज को विकसित करते हैं। जितना हम दुर्गुणों को अपने जीवन में स्थान देंगे, उतना ही आत्मा की चमक कम होती जाती है।

एक छोटे बच्चे को भी हम देखते हैं तो उसका कितना निर्मल और पवित्र स्वरूप होता है। हर आत्मा का असली स्वरूप निर्मल और पवित्र है। ये आत्मा की वास्तविकता है। इसलिए जहाँ कहीं हम पवित्र वातावरण में जाते हैं तो एक गहन शांति का अनुभव करते हैं। इसी प्रकार आप जब अपवित्र वायब्रेशन्स में जायेंगे तो वहाँ पर मन बेचैन और परेशान हो उठता है। आत्मा स्वाभाविक रूप से पवित्र है। यह उसका निजी स्वरूप है। जब हम ईश्वर के धाम से इस संसार में आए थे तो उसी स्वरूप में आए थे।

कैसे हों नववर्ष में हमारे संकल्प

- ब्र.कु. निधि,सर्वोदय नगर,कानपुर

हर वर्ष नए साल को बेहतर और खुशनुमा बनाने के लिए हम सभी ढ़ेरों संकल्प, विचार व वायदे अपने आप से करते हैं। अपनी योजनाओं, परियोजनाओं एवं ख्वाबों को साकार करने हेतु मन में अनेकों विचार तथा बातें आती हैं। उनमें बहुत से संकल्प सकारात्मक या नकारात्मक एवं दृढ़ या कमज़ोर होते हैं। नकारात्मक या कमज़ोर संकल्प हमें जीवन में आगे नहीं बढ़ने देते और हमारे व्यक्तित्व को भी निखरने नहीं देते, जिससे हम जिंदगी से भी हताश और निराश होने लगते हैं। रिश्तों व संबंधों पर भी हमारे संकल्पों, सोच का गहन प्रभाव पड़ता है। इसलिए अपनी संकल्प शक्ति को शुभ एवं सकारात्मक बनाएं, तभी जीवन में सच्ची खुशियाँ, भरपूरता व सुख की महसूसता होगी।

क्या हों हमारे संकल्प? - मनुष्य के मस्तिष्क-पटल पर हर मिनट में हज़ारों संकल्प-विकल्प आते जाते हैं। हमारी संकल्प शक्ति पलक झपकने से भी ज्यादा तेज़ गति से चलती है। इसलिए चेक करते रहें कि हमारे संकल्प कौन से हैं? अच्छे या बुरे। अच्छे या श्रेष्ठ, स्नेह युक्त, दृढ़ संकल्प अधिक से अधिक हमारे मन-बुद्धि में चलें और हमारा नया वर्ष सुखमय, सार्थक एवं उमंग-उत्साह पूर्ण बने इसके लिए हमें अपने मन को सहज, सरल, मजबूत, सकारात्मक तथा पवित्र बनाना होगा। साथ ही हमारे हर संकल्प में दूसरों के लिए शुभ भावना, शुभ-कामना व सहयोग की भावना हो, यह हमारी कोशिश होनी चाहिए। संकल्प प्रभावशाली, नवीनता की महानता का अनुभव कराने वाले, जीवन में नई प्रेरणा भरने वाले तथा श्रेष्ठ स्थिति बनाने वाले होने चाहिए, जिससे हम अधिकारी बन जीवन में हर कदम पर सफ़लता पाते रहें। मन में उठने वाले संकल्पों/विचारों पर हमारा नियंत्रण होना चाहिए जिससे जब चाहें फुल स्टॉप लगा दें और व्यर्थ संकल्पों को आने से रोक सकें। यह भी ध्यान देने की ज़रूरत है कि हम केवल सकारात्मक बातें सोचें जिससे हमारे संकल्प समर्थ व श्रेष्ठ बने। इसके लिए अपने मन-बुद्धि को शुद्ध एवं पवित्र बनाना होगा, तभी संकल्प शक्तिशाली और स्फूर्तिवान होंगे तथा दिल से निकली हुई बात/संकल्प तुरंत पूरा होगा। मान लीजिए कि आपके कोई निकटतम को गंभीर बीमारी हो जाए जिससे उन्हें बहुत पीड़ा का सामना करना पड़ रहा हो और डॉक्टर्स ने भी जवाब दे दिया हो। उस समय ऐसी आत्मा को सांत्वना या तसल्ली रूपी साकाश दें तो उस व्यक्ति को खुशी, शांति और आनंद की अनुभूति कराने में सहायक बन जाएंगे तथा उन्हें बीमारी से लड़ने एवं सामना करने की क्षमता मिलेगी।

कैसे बनाएँ संकल्प श्रेष्ठ ?- यदि हमें अपनी संकल्प शक्ति को श्रेष्ठ व समर्थवान बनाना है तो अपनी सोच को गुणवान और सकारात्मक बनाना होगा। सहनशीलता, सन्तोष, त्याग, मधुरता, नम्रता, स्नेहीपन, दृढ़ निश्चय आदि गुण अपनाकर एवं अपनी दृष्टि परिवर्तन करके भी हम समर्थ संकल्पों का आह्वान कर सकते हैं। उमंग उत्साह के साथ सदा सहयोगी आत्मा बनकर सहयोग के संकल्प कार्य में लगाओ तो विजयी अवश्य बनेंगे। ऐसे सहयोग के संकल्प श्रेष्ठ बन जाते हैं जब हम अपने साथ औरों के भी संकल्पों में बल भर देते है। ऐसे श्रेष्ठ संकल्प ही इंजेक्शन का काम करते हैं। दृष्टि, वृत्ति को शुद्ध व पवित्र बनाकर जो भी संकल्प करें, वह सकारात्मक एवं शक्तिशाली होते हैं जिससे कार्य में सफ़लता मिलना तय हो जाता है। इसके अलावा जो भी संकल्प करें,वैसा स्वरूप बनने का भी अभ्यास करें। इससे हम आत्मभिमानी बन बहुत शक्तिवान हो जाएंगे। अशरीरी होकर आत्मिक स्थिति में रहकर दूसरों के लिए श्रेष्ठ संकल्प करें जिससे उनका जीवन भी निर्विघ्नकारी और मंगलकारी बन सके और मुख से यही बोल निकले ''पाना था सो पा लिया, और क्या अब बाकी रहा''...।

कैसे भरें संकल्पों में शक्ति? - सारे दिन में हमें ढ़ेरों विचार आते हैं जिनमें बहुत से नकारात्मक व कुछ सकारात्मक होते हैं। नकारात्मक विचारों/संकल्पों के बार-बार चलने से हमारे मन में आने वाली बातों की

- शेष पेज 11 पर

OM 16 EDITED final_Page 1 and 2 19-11-2014 22:41 Page 11

"हमने पवित्रता को अपनाया है"

-ब्र.कु.सूर्य, माउण्ट आबू।

गतांक से आगे ...

भगवान से हमारी मित्रता, पवित्रता पर आधारित है

मित्रता अर्थात दो सच्चे दिलों का मिलन। अगर एक मित्र सच्चा न हो, धोखा देता हो तो मित्रता समाप्त हो जाती है। हमारी ईश्वर से मित्रता की नींव पवित्रता ही है और हमारी यह मित्रता तब ही स्थाई होती है जब हम उसमें पूर्ण वफादार हों। हम यदि गुह्यता से विचार करें तो एक भी अपवित्र संकल्प उठाना अपने उस परम मित्र को धोखा देना है और तब यह मित्रता नि:संदेह ही टूट जाएगी और हम उसके स्नेह और सहयोग से वंचित हो जायेंगे। अन्यथा तो वह परममित्र सर्वथा ही हमारा साथ निभाता है।

पवित्रता की शक्ति का सदुपयोग करें

ब्रह्मचर्य का असीम बल हमारे शरीर में संचित होता रहता है, परन्तु पतित तत्वों से बना हुआ यह शरीर उस शक्ति को अपने में समा नहीं सकता। जबकि सतयुग में वह शक्ति पावन तत्वों में विलीन होती रहती है और देवों के जीवन को दिव्य बनाये रखती है। अत: अब यदि हम उस शक्ति का रूपांतरीकरण कर पाते हैं तो पुन: उस स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

जब वैज्ञानिकों ने यह सिद्धान्त खोज निकाला कि पदार्थ को ऊर्जा में बदला जा सकता है तो उससे संहारक यन्त्रों का निर्माण हुआ। पहले यह ही मान्यता थी कि पदार्थ, पदार्थ ही रहेगा, उसे ऊर्जा में नहीं बदला जा सकता। इसी प्रकार योगाभ्यास द्वारा ब्रह्मचर्य से संचित इस शक्ति को उर्ध्वगामी करके सूक्ष्म ऊर्जा में बदल दिया जाता है और फिर वह सूक्ष्म ऊर्जा हमारे मस्तिष्क को बहुत दिव्य व शक्तिशाली बना देती है, क्योंकि जब हम अपने मन बुद्धि को परमधाम में परमपिता के स्वरूप पर एकाग्र करते हैं तो हमारी सभी नस-नाड़ियो का खिंचाव भी ऊपर की ओर हो जाता है और शक्ति उर्ध्वगामी हो जाती है।

दूसरा, पवित्रता की शक्ति का उपयोग मनन-चिन्तन में भी होता है। अत: पवित्रता के अभ्यासी को मनन पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए। इससे शक्ति का रूपान्तरीकरण भी हो जायेगा और फलस्वरूप उस शक्ति की अधिकता से उत्पन्न व्यर्थ संकल्पों से भी मुक्ति मिल जायेगी। तो मनन में भी उस शक्ति का उपयोग होता है और यही कारण है कि चिन्तक मनुष्य कभी मोटे नहीं होते।

उस शक्ति के उपयोग का तीसरा साधन है - परिश्रम। जैसे सर्वविदित है कि खेत में काम करने वाला बैल भी ब्रह्मचारी है। उसकी शक्तियों का प्रयोग परिश्रम में हो जाता है। जबकि साँढ़ विकारी है परन्तु मोटा ताजा होता है, क्योंकि स्वछंद है। अत: उस शक्ति को प्रयोग करने हेतु सच्चे योगियों को शारीरिक काम से जी नहीं चुराना चाहिए।

ब्रह्मचर्य का असीम बल हमारे शरीर में संचित होता रहता है। परन्तु पतित तत्वों से बना हुआ यह शरीर उस शक्ति को अपने में समा नहीं सकता। जबकि सतयुग में वह शक्ति पावन तत्वों में विलीन होती रहती है और देवों के जीवन को दिव्य बनाये रखती है। अत: अब यदि हम उस शक्ति का रूपान्तरीकरण कर पाते हैं तो पुन: उस स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार इस शक्ति का उपयोग करने से वह हमारे मन को प्रज्वलित नहीं करेगी। पवित्र आत्मा को अन्तर्मुखी होना चाहिए।

एक समझदार व्यक्ति या शक्तियों व ईश्वरीय खजानों से भरपूर आत्मा अवश्य ही अन्तर्मुखी होती है। अगर कोई पवित्र रहने वाली आत्मा बाह्यमुखी हो, वाचा रस में तल्लीन रहती हो तो भला उसकी पवित्रता में विश्वास भी कौन करेगा! यदि कामाग्नि को योगाग्नि में बदलने में, कोई आत्मा असमर्थ रहती है तो उसका प्रगटीकरण बाह्यमुखता, क्रोधाग्नि, ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि या चिड़चिड़ेपन की अग्नि के रूप में होता है जबकि पवित्रता चित्त को शीतल कर के मन में सुखदायी शुभ-भावना को जन्म देती है।

ईश्वरीय पथ पर अपवित्रता महा-महा पाप है

यदि किसी किसान ने रेगिस्तान में एक सुंदर बगीचा बनाया हो, कठिन परिश्रम से उसमें सुंदर सुंदर खुशबूदार फूल उगाये हों जिससे सम्पूर्ण क्षेत्र महक उठा हो और कोई दुराचारी उस बगीचे को नष्ट करने लगे, फूलों को झुलसाने लगे तो उस किसान पर क्या बीतेगी और यह कितना बड़ा पाप होगा!

इसी प्रकार परमपिता, जो कि एक अद्भुत बागवान भी है, इस कलियुगी मरुस्थल में रूहों को पवित्र बना रहे हैं। कितने वर्षों से और बड़ी ही दिव्य मेहनत से वे पवित्र सृष्टि के निर्माण का कार्य कर रहे हैं, एक दिन ऐसा आयेगा जब पवित्र रूहों रूपी पुष्पों से सम्पूर्ण जगत महक उठेगा, और यदि कोई मनुष्य उन पवित्र फूलों की ओर बुरी नज़र डाले, उनकी सुगन्धि को नष्ट करना चाहे तो उसका यह कितना भयंकर दुष्कर्म होगा? क्या वे आत्माएं उनके परम प्यार की अधिकारी होंगी?

हमें इस प्रकार चिन्तन करना चाहिए कि इन चेतन फूलों को स्वयं परमपिता ने सुगन्धित बनाया है। हम इनकी सुगन्ध में दुर्गन्ध न मिलायें, अन्यथा यह महापाप होगा। किसी पवित्र आत्मा के लिए एक भी अपवित्र संकल्प उठाना महापाप है। जैसे यदि कोई मनुष्य श्री लक्ष्मी या सरस्वती देवी के मन्दिर में जाकर उन्हें कुदृष्टि से देखे, तो उसे कितना बड़ा पापी कहेंगे। तो यह महापाप की स्मृति भी आत्मा को इस पाप से मुक्त कर देगी।

इस प्रकार प्रतिदिन चिन्तन करते हुए हमें यह देखना होगा कि हमारा हर कदम, हर संकल्प हमें हमारी सम्पूर्ण पवित्रता की ओर ले चले। हमारा रास्ता लम्बा अवश्य है परन्तु सुखदायी है और हमारा परममित्र हमारे मन को बहलाने के लिए सदा साथ है। अत: यदि इसमें कोई छोटी गलती या स्वप्न में भी गलती हो जाती है तो जीवन में निराशा के बीज नहीं बोने चाहिए बल्कि बहुत ही धैर्यता व दृढ़ता के साथ अपने लक्ष्य की ओर दौड़ना चाहिए।

कैसे हों नववर्ष... -पेज 8 का शेष क्वालिटी पर हम ध्यान नहीं दे पाते। जिससे हम अपने विचारों को शक्तिशाली व उपयोगी नहीं बना पाते। ऐसे सोच/संकल्पों रूपी खज़ाने का हम सही उपयोग करने की जगह उसे व्यर्थ गँवा देते हैं। एकाग्रता और सकारात्मकता के साथ जब हम संकल्प करेंगे तभी हमारे संकल्प शक्तिशाली होंगे और हमारे सभी कार्य सहज ही सफ़लता को प्राप्त हो जाएंगे। प्राय: असफ़लता तब प्राप्त होती है जब हम अपने संकल्पों-विकल्पों पर अटेंशन न देकर अपने निर्धारित लक्ष्य से भटक जाते हैं। ऐसे समय में हमारा मन एकाग्रचित्त न होकर किसी विषय,वस्तु या व्यक्ति में फंसकर भटक जाता है। अत: नववर्ष में अपने संकल्पों को शक्तिशाली एवं प्रभावशाली बनाने हेतु हमें अपने सोचने की शक्ति को दूसरों का कल्याण करने हेतु तथा सदा निमित्त भाव में रहकर कार्य करने में लगाना चाहिए।

ध्यान व योग की लें मदद - ध्यान व योग का जीवन में प्रयोग करके हम अपनी संकल्प-शक्ति को शुभ, कल्याणकारी तथा श्रेष्ठ बना सकते हैं। योग द्वारा स्वयं का सम्पूर्ण स्नेह परमपिता परमेश्वर शिव से जोड़ लें तो हमारी बुद्धि और संकल्प सात्विक व शुभ भावना से सजे-धजे बन जाएँगे। ध्यान-योग के निरंतर अभ्यास से आत्म-ज्योत जग जाती है और कर्मेन्द्रियों पर मन का नियंत्रण होने लगता है जिससे मन में उठने वाले सूक्ष्म संकल्पों की भी हम चेकिंग कर सकारात्मक संकल्पों को कार्य में ला सकते हैं। पुरुषार्थ या योग (ईश्वर को याद करने) से हमारे संकल्पों/सोच में परिवर्तन आता है। संकल्प से फिर कर्मों में और कर्मों में बदलाव आने से फिर से संस्कारों में फेर-बदल होता है। अत: योगी तू आत्मा बनकर अपनी संकल्प शक्ति को सही दिशा दीजिए जिससे स्वयं के तथा विश्व के कल्याण/परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं नए साल में।

पोखरा-नेपाल। ब्र.कु. परिणीता को मामेन्टो देकर सम्मानित करते हुए विंध्यवासिनी धार्मिक क्षेत्र विकास समिति के अध्यक्ष गणेश बहादुर श्रेष्ठ एवं उपाध्यक्ष योगेन्द्र प्रधान।

रायकोट-लुधियाना। एस.एम.ओ. पी.एस. सुखमिंदर सिंह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रवीण तथा अन्य।

गायघाट-विहार। बिहार विधानसभा प्रतिपक्ष के नेता नंदकिशोर यादव को चैतन्य दुर्गा की झाँकी के उद्घाटन के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रानी, ब्र.कु. खुशबू तथा अन्य।

हाजीपुर-विहार। चैतन्य दुर्गा की झाँकी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए नगर निगम के चेयरमैन मोहम्मद हैदर अली, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. आरती तथा अन्य।

देवघर-वैधनाथ। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् सभी प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बंधुओं के साथ ब्र.कु. रीता, ब्र.कु. मोहिणी एवं ब्र.कु.रेखा।

दिल्ली-न्यू फ्रेन्डस कॉलोनी। ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.सुजाता, ब्र.कु.संध्या, डॉ. अरूणा तथा अन्य।